प्रातः क्लास 5/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझा रहे हैं यहाँ तुम बैठ क्या करते हो। ऐसे नहीं सिर्फ शांति में बैठते हो। अर्थ सहित ज्ञानमय अवस्था में बैठते हो। तुम बच्चों को ज्ञान है बाप को हम क्यों याद करते हैं। बाप हमको बहुत बड़ी आयु देते हैं। बाप को याद करने से ही बीमारी आदि और पाप, सभी कट जावेंगे। हम सच्चा सोना सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम्हारा कितना श्रृंगार होता है। तुम्हारी आयु बड़ी हो जावेगी। आत्मा कंचन हो जावेगी। अभी आत्मा में खाद पड़ी हुई है। याद की यात्रा से वह सभी खाद रजो-तमो की पड़ी है वह निकल जावेगी। इतना तुमको फायदा होता है। फिर बड़ी आयु भी हो जावेगी। तुम स्वर्ग के निवासी बन जावेंगे और बहुत धनवान बनेंगे। तुम पद्मापदम भाग्यशाली बन जावेंगे। इसलिए बाप कहते हैं मन्मनाभव। मामेकम् याद करो। कोई देहधारी के लिए नहीं कहते। बाप को तो शरीर है नहीं। तुम्हारी आत्मा भी निराकार थी। फिर पुनर्जन्म में आते-2 पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि बन गई है। अभी फिर कंचन बनना है। अभी तुम पवित्र बन रहे हो। पानी की स्नान तो जन्म-जन्मांतर किए, समझा कि हम इससे पावन बनेंगे; परन्तु पावन बनने बदली और ही पतित बन नुकसान में पड़े हो; क्योंकि यह है झूठी माया..... झूठ बोलने के संस्कार हैं सभी के। नम्बरवन झूठ बोलने वाले हैं गुरु लोग। बाप कहते हैं मैं तुमको पावन बनाकर जाता हूँ, फिर तुमको पतित कौन बनाता है? यह साधु-संत, गुरु-गुसाई। अभी फ़ील करते हो ना हम कितना गंगा स्नान करते आए; परन्तु पावन तो बने नहीं। पावन बनकर तो पावन दुनिया में जाना पड़े। शान्तिधाम और सुखधाम (है) पावन धाम। यह है ही रावण की दुनिया। इसको दुखधाम कहा जाता है। यह तो सहज समझने की बातें हैं ना। इसमें कोई मुश्किलात की बात नहीं। जो कोई मिले, सिर्फ यह बोलो, अपन को आत्मा समझ बेहद के बाप को याद करो। आत्माओं का बाप परमपिता–परमात्मा शिव है। शरीर का तो हरेक का अलग-2 बाप है। आत्माओं का तो एक ही बाप है। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं, और हिन्दी में ही समझाते हैं। हिन्दी भाषा ही मुख्य है। तुम पद्मापदम भाग्यशाली इन देवताओं को कहेंगे। यह कितने भाग्यशाली हैं। यह किसको भी पता नहीं है कि यह स्वर्ग के मालिक कैसे बने। अभी तुमको बाप सुना रहे हैं इस सहज राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं। अभी है पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम। फिर तुम नई दुनिया के मालिक बनने जावेंगे। अभी बाप सिर्फ कहते हैं दो अक्षर अर्थ सहित याद करो तो भी ठीक है। गीता में मन्मनाभव अक्षर पढ़ते हैं; परन्तु अर्थ बिल्कुल नहीं समझते। बाप कहते हैं मुझे याद करो; क्योंकि मैं ही पतित-पावन हूँ। और कोई ऐसे कह न सके। बाप ही कहते हैं मुझे याद करने से तुम पावन बन, पावन दुनिया में चले जावेंगे। पहले-2 तुम सतो॰ थे फिर पुनर्जन्म लेते-2 तमोप्रधान बने हो। अभी 84 जन्म तुम्हारे पूरे हुए। हर 84 जन्म बाद फिर तुम नई दुनिया में देवता बनते हो। यह भी जानते हो हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। इसको ही 84 का चक्र कहा जाता है। रचयिता बाप और रचना दोनों को तुम जान गए हो। तो अभी तुम आस्तिक बन गए हो। आगे जन्म-जन्मांतर तुम नास्तिक थे। यह बात जो बाप सुनाते हैं और कोई जानते ही नहीं। कहाँ भी जाओ कोई भी तुम(को) यह बातें नहीं सुनावेंगे। अभी दोनों ही बाप (निराकार और साकार) तुम्हारा श्रृंगार कर रहे हैं। पहले तो बाप अकेला था। शरीर बिगर था। ऊपर से तो तुम्हारा श्रृंगार कर न सके। अभी दोनों मिलते हैं, तब ही तुम्हारा श्रृंगार होता है। अकेला कर न सके। कहते हैं ना "ब त बारहाँ" बाकी प्रेरणा वा शक्ति आदि की बात नहीं। ऊपर प्रेरणा द्वारा बल मिल न सके। निराकार जब साकार शरीर का आधार लेते हैं तब तुम्हारा श्रृंगार करते हैं। अभी बच्चों की वह चलन ही कहाँ है। गटर में डुबोने लिए कितने कोशिश करते हैं। बाबा स्वर्ग में ले जाने पुरु॰ कराते हैं, यह फिर विषय-वैतरणी नदी में जाने लग पड़ते। समझते भी हैं बाबा बरोबर हमको स्वर्ग में ले जाते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार बाबा (बंधाय)मान है। उनको ड्यूटी मिली हुई है। हर 5000 वर्ष बाद आते हैं तुम बच्चों के लिए। इस योगबल से तुम कितने कंचन बनते हो। आत्मा और काया दोनों कंचन बनती हैं। फिर रावण

राज्य में तुम छी-छी बन जाते हो। फिर अभी सा॰ करते हो इस पुरुषार्थ से हम ऐसा श्रृंगारा हुआ बनेंगे। वहाँ क्रिमिनल आई होती नहीं, तो भी अंग सभी ढके हुए होते हैं। यहाँ तो देखो कितने नंगी रहती हैं, जो कोई भल देखे और हमारे पर फिदा होकर हमारा भी काला मुँह करें, अपना भी करें। यह छी-2 बातें रावण राज्य में सीखते हैं। इस ल॰ना॰ को देखो ड्रेस आदि कितनी अच्छी है। यहाँ सभी हैं देह-अभिमानी। इन्हों को देह-अभिमानी नहीं कहेंगे। इन्हों की तो नेचरल ब्यूटी रहती है। बाप तुमको ऐसा नेचरल ब्यूटीफुल बनाते हैं। आजकल तो कोई सच्चा जेवर पहन भी न सके। कोई पहने तो उनको ही लूट कर जाये। 12 मास तक उनके पिछाड़ी पड़ते रहे तब तक चांस मिले सभी लूटने का। वहाँ तो ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसा बाप तुमको मिला है। इन बिगर तो तुम बन न सको। बहुत कहते हैं हम तो डायरैक्ट शिवबाबा से लेते हैं; परन्तु वह देंगे ही कैसे? भल कोशिश करके देखो। देखो मिलता है। ऐसे बहुत कहते हैं हम तो शिवबाबा से वर्सा पावेंगे। ब्रह्मा से पूछने की भी क्या दरकार है। शिवबाबा पुरुषार्थ से सभी कुछ दे देंगे। अच्छे-2 पुराने बच्चे उनको भी माया ऐसी चक पहन लेती है। एक को मानते हैं; परन्तु एक क्या करेंगे? बाप कहते हैं मैं एक कैसे आऊँ? बात कैसे कर सकूँ? मुख का तो गायन है (ना)। मुख से अमृत लेने कितना धक्का खाते हैं। फिर श्रीनाथ द्वारे जाकर दर्शन करते हैं; परन्तु उनका दर्शन करने से क्या होगा? इसको कहा जाता है भूत पूजा। उनमें आत्मा तो है नहीं। बाकी 5 तत्वों का पुतला बना हुआ है। तो गोया माया को याद करना हो गया। 5 तत्व प्रकृति है ना। उनको याद करने से क्या होगा प्रकृति का आधार तो सभी को है; परन्तु वहाँ है सतोप्रधान प्रकृति। यहाँ यह है तमोप्रधान प्रकृति। बाप को सतोप्रधान प्रकृति का कब आधार नहीं लेना पड़ता। यहाँ तो सतोप्रधान प्रकृति मिल न सके। यह जो भी साधु-संत आदि हैं, बाप कहते हैं इन सभी का उद्धार मुझे ही करना पड़ता है। मैं निवृत्तिमार्ग में आता ही नहीं हूँ। यह है प्रवृत्तिमार्ग। सभी को कहता हूँ पवित्र बनो। जोड़ी हो चलो। वहाँ तो नाम-रूप सभी बदल जाता है। तो बाप समझाते हैं देखो यह नाटक कैसे बना हुआ है। एक की फिचर्स न मिले दूसरे से। 500 करोड़ हैं। सभी के फिचर्स अलग-2 हैं। कितना भी कोई कुछ करे तो भी एक के फीचर्स से दूसरे का मिल न सके। इसको कहा जाता है कुदरत। वण्डर। स्वर्ग को भी वण्डर कहा जाता है ना। कितना शोभनिक है। माया के सात वण्डर्स हैं। बाप का है एक वण्डर। वह सात वण्डर्स एक पूर में रखो और यह एक पूर में रखो तो भी यह भारी हो जावेगा। एक तरफ ज्ञान, एक तरफ भक्ति को रखो, तो ज्ञान के तरफ बहुत भारी हो जावेगा। अभी तुम समझते हो भक्ति सिखलाने वाले तो ढेर हैं। ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप है। तो बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। श्रृंगार करते हैं। बाप कहते हैं पवित्र बनो। तो कहते– नहीं, हम तो गटर में जाकर छी-छी बनेंगे। गरुड़ पुराण में भी विषय–वैतरणी नदी दिखलाते हैं ना। बिच्छू-टिण्डन-सर्प आदि एक/दो को काटते रहते हैं। यह है ही वेश्यालय। बाप कहते हैं तुम कितने निधनके बन जाते हो। हम तुमको गॉड बनाते, तुम फिर डी ओ जी बन जाते हो। बाप तुम बच्चों को ही समझाते हैं। बाहर में कोई को ऐसा सीधा कहो तो लाठी मारे। बड़ी युक्ति से समझाना होता है। कई बच्चों में कोई अकल नहीं रहता बात–चीत करने की। छोटे बच्चे एकदम इनोसेन्ट होते हैं। इसलिए इनको महात्मा कहा जाता है। कहाँ कृष्ण महात्मा, कहाँ यह सन्यासी निवृत्तिमार्ग वाले महात्मा कहलाते हैं। वह है प्रवृत्तिमार्ग। वह कब भ्रष्टाचार से पैदा नहीं होते हैं। उनको कहते ही हैं श्रेष्टाचारी। अब तुम श्रेष्टाचारी बन रहे हो। बच्चे जानते हैं यहाँ बाप दादा दोनों इकट्ठे ..... यह श्रृंगार ज़रूर अच्छा ही करेंगे। तो सभी {की} दिल होगी ना जिन्होंने इन बच्चों को ऐसा श्रृंगार कराया है, तो हम क्यों न उनके पास जावें। इसलिए तुम यहाँ आते हो रिफ्रेश होने। दिल कशिश करते हैं बाप के पास आने। जिनको पूरा निश्चय होता है वह तो कहेंगे चाहे मारो, चाहे कुछ भी करो, हम कब हाथ नहीं छोड़ेंगे। कोई तो बिगर कोई कारण ही छोड़ देते हैं। यह भी ड्रामा का खेल बना हुआ है। फारकती दे देते हैं। डायवोर्स दे देते हैं। बाप जानते हैं यह रावण के वस में

करना है। बाप कहते हैं कि एक तो पवित्र बनो। दैवीगुण धारण करो। अपना पोतामेल रखो। रावण द्वारा तुमको घाटा पड़ता है। मेरे द्वारा फायदा होता है। व्यापारी लोग तो इन बातों को अच्छी रीति समझेंगे। यह है ज्ञान रत्न। कोई विरला व्यापारी ही इनसे व्यापार करे। तुम व्यापार करने आए हो। कोई तो अच्छी रीति व्यापार कर स्वर्ग का सौदा 21 जन्मों लिए कर लेते हैं। 21 जन्म तो क्या 50/60 जन्मों तक तुम बहुत सुखी रहते हो। पद्मपति बनते हो। देवताओं के पैरों में पद्म दिखाते हैं ना। अर्थ थोड़े ही समझते हैं। तुम अभी पद्मपति बन रहे हो तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं मैं कितना साधारण हूँ। तुम बच्चों को स्वर्ग में ले जाने आया हूँ। बुलाते भी हैं कि हे पतित-पावन आओ। पावन बनाओ। पावन रहते ही सुखधाम में हैं। शान्तिधाम की कोई हिस्ट्री-जाग्राफी नहीं हो सकती है। वो तो आत्माओं का झाड़ है। सूक्ष्मवतन में कोई बात ही नहीं होती। बाकी यह सृष्टि–चक्र कैसे फिरता रहता है वो तुम जान ही गए हो। सतयुग में ल॰ना॰ की डिनायस्टी थी। ऐसे नहीं कि एक ही ल॰ना॰ सिर्फ राज्य करते थे। वृद्धि तो होती है ना। फिर द्वापर में वो ही पूज्य सो फिर पुजारी बनते हैं। मनुष्य तो फिर परमात्मा के लिए कह देते हैं आप ही पूज्य..... जैसे परमात्मा के लिए कहते हैं कि वो सर्वव्यापी है। इन बातों को तो अब तुम्हीं समझते हो। आधा कल्प तुम गाते आए हो ऊँच ते ऊँच भगवान और अब भगवानोवाच्य ऊँच ते ऊँच तुम बच्चे हो। तो ऐसे बाप की राय पर भी चलना चाहिए ना। गृहस्थ व्यवहार भी सम्भालना है। यहाँ पर तो सभी रह नहीं सकते। सब रहने लगें फिर तो कितना बड़ा मकान बनाना पड़े, नी(चे) से लेकर ऊपर तक। यह भी तुम एक दिन देखेंगे कि कितनी लम्बी क्यू लग जावेगी दर्शन लेने लिए। कोई को दर्शन ही नहीं होता है तो गाली भी जाकर देते हैं। समझते हैं महात्मा का दर्शन करें। अब बाप तो है बच्चों का, बच्चो को ही पढ़ाते भी हैं। तुम जिनको रास्ता बताते हो, फिर कोई तो अच्छी रीति चल पड़ते हैं, कोई तो (ध)ारणा ही कर नहीं सकते हैं। कितने ही हैं जो कि सुनते भी रहते हैं फिर बाहर में जाते हैं तो वहाँ की वहाँ ही रख जाते हैं। वो खुशी नहीं, पढ़ाई नहीं। योग नहीं। बाबा कितना समझाते हैं कि चार्ट रखो। नहीं तो बहुत पछताना होगा। हम बाबा को कितना याद करते हैं चार्ट देखते रहना चाहिए। भारत के प्राचीन योग की बहुत महिमा है। बाबा समझाते हैं कि कोई भी बात ना समझो तो बाबा से पूछो। आगे तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे। यह है ही काँटों का जंगल। काम महाशत्रु है, वो अक्षर तो गीता के ही हैं। गीता पढ़ते थे; परन्तु समझते थोड़े ही हैं। बाबा ने भी सारी ही आयु गीता पढ़ी। समझते थे कि गीता का महात्म बहुत अच्छा है। पढ़ते-2 ही एक दिन फेंक दी। समझ में आ गया कि इसी गीता से तो भारत गिरता आया है। अभी तो बाप सेकिंड में ऊँच पढ़ाई देते हैं। वो गीता आदि पढ़ते-2 पट(जमीन) आ पड़े हैं। गीता ही माई-बाप है। बाकी सब शास्त्र हैं रचना। और शास्त्र-वेद आदि को माता नहीं कहेंगे। माता के साथ ही फिर पिता भी है। पिता ने ही गाई हुई है। बाप आकर सुनाते रहते हैं। भक्तिमार्ग की गीता का कितना मान है। गीता बड़ी भी होती है, छोटी भी होती है। कृष्ण आदि के वो ही चित्र पैसे-2 का मिलता रहता है, वो ही चित्रों के फिर बड़े-2 मंदिर बनाते हैं। अमरनाथ पर दिखाते हैं कि पार्वती को अमरकथा सुनाई। वहाँ पर फिर त(ो)ता दिखाते हैं। पैरट पढ़ते हैं। एक तो जंगली तोते हैं और एक कण्ठी वाले होते हैं। वो गीता सुनने वाला है जंगली तोते। तुम्हारे में अब कण्ठी पड़ती रहती है। तुमको अब विजयमाला का दाना बनना है। ऐसे मीठे-2 बाबा को सभी बाबा भी कहते हो। समझते भी हो कि उन्हीं से स्वर्ग की राजाई मिलनी है। सुनते, कहते, फिर भी अहो! मम् माया, फारकती देवन्ते। बाबा कहा तो बाबा माना ही बाप ना। भक्तिमार्ग में भी गाया जाता है पतियों का भी पति है, गुरुओं का भी गुरु है। वो एक ही है। आजकल तो सबसे बड़ा गुरु शंकराचार्य को मानते हैं। तुमने देखा कि बड़े ते बड़ा शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते थे। तो गुरु (कैसे) हुआ? तुम जानते हो (कि) ..... ही एक सद्गति दाता है। ओम